## भूमिका

ओशो की प्रशंसा में कुछ भी कह पाना असंभव सा लगता है। घूम-फिर कर दो ही शब्दों पर लौट आना पड़ता है कि ओशो अनूठे हैं, वे अपूर्व हैं। या उनकी प्रशंसा के लिए उन शब्दों को ज्यों का त्यों रख देना चाहिए जो उन्होंने कृष्ण, बुद्ध या कबीर के लिए कहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत और भारत की समस्याओं से जुड़े ओशो के विचार आंखें खोल देने वाले हैं। जिस भी सोच-विचार वाले व्यक्ति ने इस प्रज्ञापुरुष के विचार सुने या पढ़े हैं वह एक ही बार में नत-मस्तक हो गया। उनका ही होकर रह गया। वे करुणा के सागर हैं, उनकी करुणा का कोई अंत नहीं। लेकिन उनकी करुणा में कहीं दीनता नहीं। ओशो संपूर्णता से चोट करने वाले एक संन्यासी योद्धा हैं।

आज से करीब बीस वर्ष पहले जब यह संन्यासी योद्धा अधर्म और असत्य के विरुद्ध युद्ध के मैदान में उतरा तो न्यस्त स्वार्थों के खेमों में हड़कंप मच गया। पंडितों-पुरोहितों की घिग्घियां बंध गईं। मूढ़ राजनीतिज्ञों के पांवों के नीचे से जमीन खिसकने लगी। उन्होंने पहला वार गांधीवाद पर किया--"मैं कोई राजनीतिज्ञ नहीं हूं लेकिन आंखें रहते देश को रोज अंधकार में जाते हुए देखना भी असंभव है। धार्मिक आदमी की उतनी कठोरता और जड़ता मैं नहीं जुटा पाता हूं। देश रोज-रोज, प्रतिदिन नीचे उतर रहा है। उसकी सारी नैतिकता खो रही है, उसके जीवन में जो भी श्रेष्ठ है, जो भी सुंदर है, जो भी सत्य है, वह सभी कलुषित हुआ जा रहा है। इसके पीछे जानना और समझना जरूरी है कि कौन सी घटना काम कर रही है और चूंकि मैंने कहा कि गांधी के बाद नया युग प्रारंभ होता है, इसलिए गांधी से ही विचार करना जरूरी है।"

"गांधीवादी कहते हैं कि उस पर विचार नहीं करना है। जो उन्होंने कहा है उसे वैसे ही मान लेना है। यह बात इतनी अंधी और खतरनाक है कि अगर इन सारी बातों को इसी तरह मान लिया गया तो गांधी की आत्मा भी आकाश में कहीं होगी तो रोएगी, क्योंकि गांधी खुद अपनी जिंदगी में हर वर्ष अपनी भूलों को स्वीकार करते रहे और मानते रहे कि जो भूलें हो गईं उन्हें छोड़ देना है। अगर गांधी जिंदा होते तो इन बीस वर्षों में उन्होंने बहुत सी भूलें स्वीकार की होतीं। लेकिन गांधीवादी कहते हैं कि अब कोई भूल पर ध्यान नहीं देना है। जो कहा गया है उसे चुपचाप मान लेना है। यह अंधापन बहुत मंहगा साबित हुआ। बुद्ध और महावीर को अंधा मान लेने से, अंधापन मान लेने से उतना नुकसान नहीं हो सकता है, क्योंकि बुद्ध और महावीर ने व्यक्तिगत मनुष्य के आत्मोत्कर्ष की बात की है। हिंदुस्तान में गांधी एक पहले ही व्यक्ति थे, जिन्होंने सामाजिक उत्कर्ष का भी विचार किया है। बुद्ध और महावीर को मान लेने से एक-एक व्यक्ति भटक सकता है, गांधी को अंधेपन से मान लेने से पूरे समाज का भविष्य भटक सकता है, पूरा देश भटक सकता है, इसलिए गांधी पर विचार कर लेना बहुत जरूरी है।"

रोज-रोज अंधकार की ओर बढ़ते हुई इस देश के दुर्भाग्य पर किए गए ओशो के विचारों ने आंधी ला दी। एक विचार प्रक्रिया शुरू हो गई। राजनीतिज्ञ बचाव की मुद्रा में आ गए--"यह बिल्कुल स्वाभाविक है। जो मैं कह रहा हूं, बहुत से न्यस्त-स्वार्थों के विपरीत कह रहा हूं, जो मैं कह रहा हूं, बहुत से पंडितों, पुरोहितों और वादों के

विपरीत कह रहा हूं। जो मैं कह रहा हूं, जो पुराना है, उसके विपरीत कह रहा हूं। तो पुराना अपनी रक्षा के उपाय करेगा। लेकिन मेरी समझ यह है कि जब भी कोई विचार रक्षा की, डिफेंस की हालत में आ जाता है, तो उसकी मौत करीब है। जब भी कोई विचार डिफेंसिव हो जाता है और रक्षा करने लगता है तब उसकी मौत करीब आ जाती है। और जब विचार जीवंत होता है, तब वह आक्रामक होता है और जब मरने लगता है, तब वह रक्षात्मक हो जाता है। इसलिए मेरे लिहाज से वह सब लक्षण हैं। अगर एक आदमी को न्यूट्रलाइज करने के लिए दो साल मेहनत करनी पड़े, तो वे बड़े साल भर लड़ाई चलानी पड़ती हो, तो ये बड़े शुभ लक्षण हैं। साधारण लक्षण नहीं हैं। बड़े शुभ लक्षण हैं। मतलब यह है कि एक बात उनकी समझ में आ गई है कि वे डिफेंस में हैं।

"दूसरी बात यह है कि जो मैं कह रहा हूं, और जो वह कह रहे हैं, हम दोनों के बल अलग हैं। अलग का मेरा मतलब यह है कि मेरा बल भविष्य में है, आने वाली पीढ़ी में है; उनका बल अतीत में है, जाने वाली पीढ़ी में है। उनका जो बल है, वह जाने वाली पीढ़ी में है और अतीत में है। उनका बल डूबते हुए सूरज में है, मेरा बल उगते हुए सूरज में है।

"इसलिए मुझे उनकी कोई बहुत चिंता लेने जैसी बात नहीं है। अगर बीस साल वे इसी तरह गुजारते हैं, तो भी आप देखेंगे कि उनका सूरज डूब जाएगा। क्योंकि जिनका उनको बल है, वे बीस साल में विदा हो जाएंगे, जिनका मेरा बल है, वे बीस साल में शक्तिशाली हो जाएंगे। इसलिए लड़ाई आज भला ऐसी कुछ लग सकती है कि मैं कुछ कह कर जाता हूं, फिर साल, छह महीने में उसको लीप-पोत दिया जाता है, लेकिन ऐसा विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता है। और एक बड़े मजे की बात यह है कि जब मुझे गलत सिद्ध करने में, या मैं जो कह जाऊं उसे लीप-पोत डालने में उनको सारी ताकत लगानी पड़ रही है, तो वे कुछ दे नहीं पाएंगे और बीस साल में उनका काम सिर्फ इतना ही रह जाएगा, जैसा कि घर में सुबह नौकर घर को साफ करता हो, कचरा साफ करता है, उससे ज्यादा उनका मूल्य नहीं रह जाएगा। वे क्रिएटिव देने की हालत में कुछ भी नहीं हैं।

"मैं उनकी चिंता नहीं लेता। मुझे जो कहना है, वह मैं कहे चला जाऊंगा। मुझे जो ठीक लगता है, वह मैं दोहराए चला जाऊंगा। मुझे जो अच्छा लगता है, उसे मैं बनाए चला जाऊंगा। मेरा भरोसा क्रिएटिविटी में है। मेरा भरोसा इतना नहीं है कि वे क्या कर रहे हैं, मैं उनसे जूझने जाऊं, क्योंकि मैं मानता हूं कि वे हारी हुई बाजी लड़ रहे हैं। इसलिए उनकी चिंता लेने की जरूरत नहीं है।

"और फिर एक बात है कि कुछ चीजें हैं, जो मर चुकी हैं--सिर्फ कुछ स्वार्थ है, उनको जिंदा रखने को--लाशें हो चुकी हैं। मकान गिर चुका है; लेकिन कुछ लोग बल्लियां लगाए हुए सम्हाले खड़े हैं। क्योंकि उनका सारा स्वार्थ उसमें है। और हम इतने बड़े संक्रमण के समय में हैं, इतना बड़ा टरंसफार्मेशन करीब है, इतने जोर से सारी दुनिया बदल रही है कि बिल्लियां बहुत ज्यादा देर नहीं रोकी जा सकतीं। और न बहुत ज्यादा इस मुर्दे को अब जिंदा रखा जा सकता है। वह तो गिरेगा।"--

जो पुराना है वह जाएगा। जो मृत है वह गिरेगा। क्योंकि धर्मयुद्ध छेड़ दिया है ओशो ने। और यह धर्मयुद्ध धर्म की जीत तक, धर्म की स्थापना तक चलने वाला है। यह युद्ध कोई दो देशों के बीच का युद्ध नहीं है कि इसमें कोई समझौता हो जाए। यह तो अंत तक चलने वाला है। और अंततः धर्म जीतेगा, सत्य जीतेगा, यह संन्यासी योद्धा जीतेगा। यह तय है। लेकिन इस युद्ध को इतना लंबा नहीं चलना चाहिए था। इस युद्ध को जीत लिया जाना चाहिए था क्योंकि इस समय इस पृथ्वी पर भगवान के विचारों का कोई तोड़ नहीं है। किसी में सामर्थ्य नहीं है। इस धर्मयुद्ध के छिड़े करीब बीस वर्ष बीत गए हैं, इस तरह हिसाब लगाते हैं तो कभी-कभी दुश्चिंता

होती है कि अब तक तो लगभग आधी मनुष्यता को खबर लग जानी चाहिए थी कि यह संन्यासी योद्धा हमारा शत्रु नहीं बल्कि परम मित्र है। यह हमारी बेड़ियां काटने वाला मुक्तिदाता है। इस खबर न लगने से बड़ा अहित हुआ है। मनुष्य-जाति के इस अहित के लिए जिम्मेवार हैं वे लोग जो संचार-माध्यमों पर कुंडली मारे बैठे हैं। संचार-माध्यम को इस धर्म-युद्ध में संजय की भूमिका निभानी चाहिए थी; जैसी महाभारत के युद्ध में निभाई थी निष्पक्ष भूमिका। युद्ध-क्षेत्र में क्या हो रहा है, सिर्फ इसकी खबर देना। ओशो के प्रखर विचारों ने, ओजस्वी वाणी ने मनुष्यता के दुश्मनों पर, संपद्रायों पर, मठाधीशों पर, अंधे राजनेताओं पर जोरदार प्रहार किया लेकिन पत्र-पत्रिकाओं ने छापीं या तो ओशो पर चटपटी मनगढंत खबरें या उनकी निंदा की। भ्रम के बादल फैलाए, ये भ्रम के बादल आड़े आ गए ओशो और लोगों के। जैसे सूरज के आगे बादल आ जाते हैं। इससे देर हुई। इससे देर हो रही है मनुष्य के सौभाग्य को मनुष्य तक पहुंचने में।

--"मेरी दृष्टि में जीवन में शांति हो और अंतस्थल पर प्रेम का उदघाटन हो तो आदमी जो भी करता है, वह सेवा है। और रास्ते पर बुहारी लगाना ही रचनात्मक नहीं है, आपकी खोपड़ी में बुहारी लगाना ज्यादा रचनात्मक है। मैं सिर्फ बोल नहीं रहा हूं। विचार से बड़ी और कोई रचना जगत में नहीं है। विचार से महीन, विचार से ज्यादा अदभुत, विचार से ज्यादा शक्तिशाली कोई क्रांति नहीं है। क्योंकि मूलतः विचार के बीज ही हृदय में जाकर अंततः जीवन को, समाज को रूपांतरित करते हैं। लेकिन अगर गांधी जी और विनोबा जी के कारण एक ऐसी बात फैल गई कि कोई सड़क पर बुहारी लगाए या कोई जाकर किसी बीमार आदमी का हाथ-पैर धो दे, या कोढ़ी का पैदा दबा दे तो वह विचार देने से भी बड़ी सेवा कर रहा है, यह तो बात निहायत नासमझी से भरी हुई है।"--

ओशो ने हमारे देश को विचार की क्रांति में ले जाने की कोशिश की है। जो कि इस देश की एकमात्र जरूरत है। उन्होंने हर तरह से चेष्टा करके, वैचारिक शॉक्स दे करके नींद तोड़ने की कोशिश की है ताकि इस देश का विचार जग सके। उन्होंने एक-एक आदमी की आस्था की जमीन खींच ली। उन्होंने गांधीवाद पर बोल कर गांधीवादियों को आईना दिखा दिया। समाजवाद और पूंजीवाद की सही व्याख्या करके राजनैतिक स्वार्थों को नंगा कर दिया--"नहीं, किसी भी तरह का दबाव अहिंसात्मक नहीं है। सब दबाव वाइलेंस है, दबाव हिंसा है। और इसलिए गांधी के सत्याग्रह और अनशन का परिणाम भारत के लिए अच्छा नहीं हुआ। सारा देश आज किसी भी टुच्ची बात पर सत्याग्रह करता है, किसी भी बेवकूफी की बात पर अनशन शुरू हो जाते हैं। सारा मुल्क परेशान है। गांधी जो तत्व दे गए हैं, वह मुल्क को भरमा रहा है और भटका रहा है और तकलीफ में डाल रहा है। और अगर वह बढ़ता चला गया तो हिंदुस्तान की नौका कहां डूब जाएगी, किन चट्टानों से टकरा कर, कहना मुश्किल है।"

"मेरी अपनी मान्यता यह है कि हिंदुस्तान के सारे महात्माओं ने आदर्श इतने ऊंचे रखे हैं कि सामान्य मनुष्य उन तक उठ ही नहीं सकता। आदर्श इतने ऊंचे रखे हैं कि सामान्य मनुष्य उनकी तरफ आंखें उठा कर भी नहीं देख सकता। और इसका परिणाम यह हुआ कि हिंदुस्तान में कुछ थोड़े से लोग, बड़े-बड़े लोग उस तरह पैदा हुए, और बाकी समाज हीन से हीन होता चला गया। अगर आदर्श असंभव होंगे तो समाज हीन हो ही जाएगा। गांधी के आदर्श भी असंभव की सीमा छूते हैं। और असंभव आदर्श प्रभावित कर सकते हैं, आकर्षित कर सकते हैं लेकिन आचरण में नहीं जाए जा सकते।"

"मेरी नजर में पूंजीवाद का अंतिम परिणाम समाजवाद है। वह बिल्कुल सहज व्यवस्था है। उसके लिए किसी क्रांति में से गुजरने की जरूरत नहीं है। असल में पूंजीवाद ही वह क्रांति है, जिसके फल में समाजवाद

आता है। पूंजीवाद ही वह क्रांति है जिससे समाजवाद आ जाता है, अनिवार्यरूपेण। क्योंकि पूंजीवाद एक काम कर देता है, संपत्ति को पैदा करने का। और यह इतना बड़ा काम है कि पूंजीवाद के अलावा कोई भी नहीं कर सकता।"

"मेरी अपनी समझ तो यह है कि हिंदुस्तान को पचास साल सुनियोजित पूंजीवाद की जरूरत है, प्लैंड कैपिटलिज्म की जरूरत है। हिंदुस्तान पचास साल में इतनी संपत्ति पैदा करने में संलग्न हो कि बांट सके। हिंदुस्तान के लिए समाजवाद की बात पचास साल बाद अर्थ की होगी, और अभी आत्मघाती है, सुसाइडल है। अभी हमने बात की कि मरे। और अगर हमने अभी समाजवाद पकड़ लिया, जैसा कि हमें डर लग रहा है कि हम पकड़ लेंगे, क्योंकि नीचे गरीब जनता का जो दबाव है, वह दबाव हमें समाजवाद पकड़वाने के लिए राजी कर रहा है।"

हो सकता है ओशो ने भूखे गरीबों को पंगत में बिठा कर कभी खाना न खिलाया हो पर जिस निर्धन को भी उनके विचारों ने छू लिया वह अपने आत्म-आसन पर बैठ कर बादशाह हो गया। यह भी सच है कि उन्होंने कोई अस्पताल, धर्मशाला या प्याऊ नहीं बनाए, लेकिन उनके बताए ध्यान और समाधि के प्रयोगों ने संपूर्ण मानव-जाति के लिए मानसिक रुग्णता से मुक्ति पाने के रास्ते खोल दिए हैं। उन्होंने दूसरे धन्नासेठों की तरह कोई स्कूल या कालेज भी नहीं बनवाया लेकिन उनके विचारों की बगिया ओशोधाम कल पूरे विश्व को प्रेम और जीवन जीने की कला सिखाने वाला विश्वविद्यालय साबित होगा।

आज पूरा मानव समाज शोषण, युद्ध, घृणा, असमानता से ग्रस्त है, इस छोर से उस छोर तक। एक तरफ इतनी समस्याएं हैं, दूसरी तरफ अकेले हैं ओशो। एक तरफ इतने मनुष्यता के दुश्मन हैं, दूसरी तरफ अकेले मित्र हैं ओशो।

ना इतनी ते.ज चले सर फिरी हवा से कहो

शजर पे एक ही पत्ता दिखाई देता है।

"उसी विचार की दिशा में मैं प्रश्न कर रहा हूं। एक अकेले आदमी की आवाज कितनी हो सकती है, जिसके पास न कोई संगठन है, न कोई संस्था है, न कोई साथी है, न कोई संपत्ति है? एक अकेले आदमी की आवाज कितनी हो सकती है? लेकिन मैं इस आशा में आवाज दिए ही चला जाऊंगा, जब तक कि वे मेरी आवाज बिल्कुल बंद ही न कर दें। मुझे यह ख्याल है कि कुछ लोग यह आवाज सुन लेंगे। और अगर आवाज में कोई सत्य होगा तो यह आवाज रुकवाई नहीं जा सकती, यह गांव-गांव, कोने-कोने, एक-एक आदमी तक जरूर पहुंच जाएगी। अगर परमात्मा की यह मर्जी होगी कि भारत सत्य के प्रकाश में जागे तो यह होकर रहेगा। इसे कोई भी रोक नहीं सकता है।"

ओशो की बीस वर्ष पूर्व दी हुई आवाज लाखों दिलों तक पहुंची हैं, लाखों लोगों तक पहुंच रही है। नये मनुष्य के जन्म की तैयारी हो चुकी है। आज नहीं तो कल हम ओशो की ही उपस्थिति में जीवन के परम सौभाग्य की वर्षा देखेंगे। और तब यह अभागन बीसवीं सदी जिसके माथे पर दो विश्व-युद्धों का कलंक लगा है इसलिए शर्मिंदा है तो कल अपने इस सौभाग्य पर गर्व करेगी कि वह ओशो जैसे महामानव की जन्मदात्री सदी है। यह अभावग्रस्त देश भारत जो आज पश्चिम के दिए हुए दान और सहायता के एहसानों तले दबा सिर झुकाए खड़ा है, कल गर्व से पश्चिम को बताएगा कि हमने तुम्हें ओशो जैसा अनूठा उपहार दिया है।

आशकरण अटल

28, कालिका निवास, नेहरू रोड

सांताक्रुज (पूर्व)
बंबई-55

श्री आशकरण अटल हास्य-व्यंग के प्रसिद्ध युवा कवि हैं। सर्वथा मौलिक और अनूठे ढंग के। साथ ही साथ आप दूरदर्शन के लिए अनेक सीरियल और फीचर-फिल्मों के लेखक एवं निर्माता-निर्देशक हैं। इन्हीं दिनों आपको वैद्यराज दीक्षित पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आपने ओशो के जीवन-दर्शन पर आधारित काव्य का रसपूर्ण सृजन किया है।